घटी तुल्य ३ राशि और २५ के आद्या १२ अंश ३० कला हुआ, इसको उदयकालिक सूर्य ४।२४°।३३'।२८"+३।१२°।३०' = १।१२।३।२८ यह राश्यादि घटीलग्न हुआ।

लग्न दो प्रकार के होते हैं। उनमें अपनी-अपनी दृष्टिवश (अपने अपने स्थानीय राश्युदय द्वारा सिद्ध) जिस लग्न से ग्रह नक्षत्र के बिम्बोदयास्त, ग्रहण में विक्षेप, दृक्क्षेपादि तथा ग्रहणादि की गणना होती है- वह केवल 'लग्न' शब्द से बोधित किया गया है। तथा जिससे उपरोक्त भावों के फल का ज्ञान होता है- वह 'भावलग्न' शब्द से व्यवहृत है एवं उसके अन्तर्गत उसी (भावलग्न) के सूक्ष्म अवयव आद्या और पञ्चमांश के उदय होरालग्न और घटीलग्न नाम से व्यवहृत है।

स्थानलग्नवशाद्यस्माद् भावसिद्धिर्नजायते।
तस्मात जातकयात्रादौ भावलग्नात् फलं वदेत्॥

चूंकि स्वोदयमान सिद्ध लग्न से भावसिद्धि कदापि नहीं होती अतः भाव लग्न से ही फल कहना चाहिये।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

के लिए एक आवश्यक पृथक् लिखना चाहिये। उसमें उसमें सन्धि से ग्रह यदि अल्प हो तो पूर्वभाव में, सन्धि से अधिक हो तो अग्रिम भाव में तथा यदि सन्धि के अंश बराबर ग्रह के अंश भी हो तो उसी सन्धि स्थान में उस ग्रह को लिखना चाहिये।

होरालग्नसाधन प्रकार—

इष्टकाल को १२ से गुणा करके अंशादि गुणनफल को औदयिक सूर्य में जोड़ने से होरा-लग्न होता है।

उदाहरण- पूर्वोक्त इष्टकाल ३।२५ और उदयकालिक सूर्य ९।२९।३३।२८ है।

इष्टकाल ३।२५ को १२ से गुणा किया, ३।२५×१२ = ३६।३०० साठ (६०) से सवर्णन कर ४१°।०' अंशादि हुए अर्थात् १ राशि ११ अंश, इसको उदयकालिक सूर्य में जोड़ दिया ९।२९°।३३'।२८"+१।११° = ११।१०।३३।२८ यह राश्यादि होरालग्न हुआ।

षष्टीलग्नसाधन प्रकार—

इष्टकालिक घटी तुल्य राशि और पल के आधा तुल्य अंश इसको औदयिक सूर्य में जोड़ने से षष्टीलग्न होता है।

उदाहरण — पूर्वोक्त इष्टकाल ३।२५ है अतः

P.T.O

Page No. 03
Date 09 06 21

लग्न कुण्डली लिखने की रीति —

लग्नराशिः पुरः स्थाप्यस्ततो राशीन् क्रमान्लिखेत् ।
तत्तत् ग्रहः स्थाप्यो यस्मिन् राशौ च यः स्थितः ॥

राशिलग्नकुण्डली

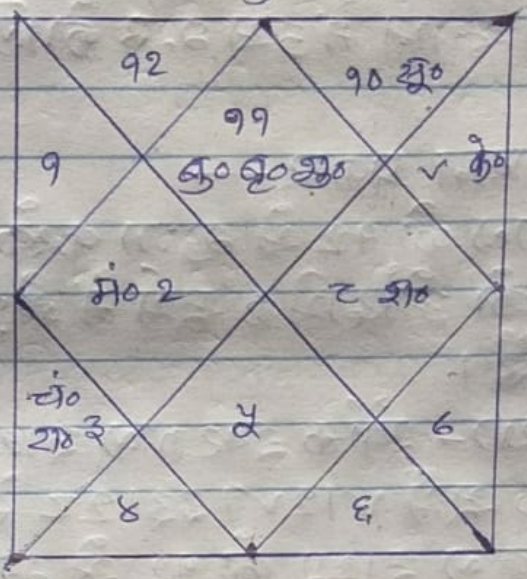

१२ कोष्ठों का एक चक्र बनाकर उसके प्रथम (मध्य सामने वाले) कोष्ठ में लग्नराशि को लिखकर आगे क्रम से सब राशियों को स्थापित करें, फिर जो ग्रह जिस राशि में हो (इष्टकालिक स्पष्टग्रह चक्र) उस राशि में स्थापित कर दें।

चलित (भाव) कुण्डली लिखने की रीति —

स्वं भावफलं ज्ञातुं भावचक्रं पृथक् लिखेत् ।
सन्धौ लग्नो ग्रहः पूर्वभावे स्थाप्योऽधिकोऽधिमे ॥
सन्ध्यशादिसमे सन्धौ ततो वाच्यं शुभाशुभम् ।
जन्मयात्राविवाहादिसत्कर्मसु विचक्षणैः ॥

इस प्रकार भावों (तनु आदि द्वादश भावों) के फल जानने

P.T.O

दग्धयोग —

एकादशी चेन्दुवारे द्वादशी चार्कवासरे।
षष्ठी बृहस्पतेर्वारे तृतीया बुधवासरे॥
अष्टमी शुक्रवारे च नवमी शनिवासरे।
पञ्चमी भौमवारे च दग्धयोगाः प्रकीर्तिताः॥

सोमवार में ११, रवि में १२, गुरु में ६, बुध में ३, शुक्र में ८, शनि में ९, मङ्गल में ५ (पञ्चमी) तिथि ये दग्धयोग हैं, जो शुभकर्म में त्याज्य हैं।

विषयोग —

षष्ठी शशाङ्के नवमी च शुक्रे-
बुधे द्वितीया तपने चतुर्थी।
जीवेऽष्टमी सौरिकुजेऽहि सप्तमी
योगा विषाख्याः कुलनाशनाः स्युः॥

सोमवार में ६, शुक्र में ९, बुध में २, रवि में ४, गुरु में ८, शनि और मंगल में ७ (सप्तमी) तिथि ये विषयोग हैं, जो शुभकर्म में वर्ज्य हैं।

हुताशनयोग —

सप्त षष्ठ्यादि-तिथयः सोमवारादिभिर्युताः।
अग्निजिह्वाः सप्त योगा मङ्गले कुलनाशनाः॥

षष्ठी से द्वादशी तक ७ तिथि तथा सोम से रवि तक ७ वार इनका क्रमशः योग होने पर हुताशन-योग बनता है (अर्थात् सोम में ६, मङ्गल में ७, बुध में ८, गुरु में ९, शुक्र में १०, शनि में ११ और रविवार में १२) जो शुभकार्य में त्याज्य है।

P.T.O

उपशास्त्री

Page No. 01
Date 09 06 21

सिद्धयोग —

नन्दा तिथिः शुक्रवारे सौम्ये भद्रा कुजे जया।
रिक्ता मन्दे गुरोर्वारे पूर्णा सिद्धाह्वया तिथिः॥

शुक्र में नन्दा (१,६,११), बुध में भद्रा (२,७,१२), मङ्गल में जया (३,८,१३), शनि में रिक्ता (४,९,१४) और गुरुवार को पूर्णा (५,१०,१५) सिद्धयोग कहलाता है।

अमृतयोग —

चन्द्रार्कयोर्भवेत पूर्णा कुजे भद्रा जया गुरौ।
शनिचन्द्रजयोनन्दा भृगौ रिक्ताऽमृताह्वया॥

रवि और सोम को पूर्णा (५,१०,१५), मंगल को भद्रा (२,७,१२), बृहस्पति को जया (३,८,१३), शनि और बुध को नन्दा (१,६,११) अमृत योग है।

मृत्युयोग —

आदित्य-भौमयोनन्दा भद्रा भार्गव-चन्द्रयोः।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा॥

रवि और मंगल को नन्दा, शुक्र और सोम को भद्रा, बुध को जया, बृहस्पति को रिक्ता और शनि को पूर्णा हो तो मृत्युयोग है।

P.T.O